18 / 12 / 78 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

वर्तमान के फीचर्स द्वारा फ्यूचर को देखने का अनुभव

➢➢ आत्मिक स्वरूप की अनुभूति

➳ _ ➳ मैं आत्मा मन, बुद्धि को भ्रुकुटी बिंदु पर एकाग्र करती हूं...

→ मैं लाइट बिंदु बन सुप्रीम लाइट के नीचे बैठती हूं...

→ इस लाइट से निरन्तर तेज किरणों का प्रवाह मेरे ऊपर आ रहा है...

→ ये किरणें मुझ आत्मा को गुणवान बना रही हैं...

→ मैं खुद को बेहद शक्तिशाली अनुभव कर रही हूं...

■ ये दिव्य प्रवाह मुझे भी दिव्य बना रहा है...

■ ये मेरा रियल स्वरूप है, मेरे स्वरूप की रियल्टी है...

➳ _ ➳ मुझ आत्मा को रियल से रॉयल्टी तक का सफ़र तय करना है...

→ भविष्य का मुझ आत्मा का रॉयल स्वरूप देवी देवता का है...

→ नई स्वर्गिक दुनिया का खाका खिंच चुका है...

→ भविष्य स्वरूप मेरे सामने है...

→ इस दुनिया में पदार्पण के लिए मुझे स्वयं को तैयार करना होगा...

■ अभी के पुरषार्थ से भविष्य दुनिया के लायक बनना होगा...

➢➢ मैं परमात्मा का होवनहार बच्चा हूं

➳ _ ➳ भविष्य दुनिया की अधिकारी ताजधारी आत्मा हूं...

→ मेरी अनादि स्मृति जाग्रत हो गई है...

→ मुझ में परमात्मा सर्व शक्तियां भर रहे हैं...

→ मेरा हर कर्म सत्य स्वरूप बनता जा रहा है...

→ हर कर्म में बाप समान चरित्र...

→ मेरा हर बोल समर्थ बोल...

→ प्राप्तियों की अनुभूति स्वरूप हूं...

■ मेरे कर्म, बोल बाप समान बन बाबा की प्रत्यक्षता कर रहे हैं...

■ मैं आत्मा ऑथारिटी स्वरूप बन गई हूं...

➳ _ ➳ मेरा दाता स्वरूप जाग्रत हो गया है...

→ मैं किसी भी व्यक्ति, वैभव व अल्पकाल के सुखों में नही फंसती...

→ मेरी नज़रों में केवल एक बाप ही समाए हुए हैं...

→ सतोप्रधानता की ओर कदम बढ़ाती जा रही हूं...

■ अपने रियल स्वरूप के द्वारा रॉयलटी में रहने वाली आत्मा बनती जा रही हूं...

➢➢ बाप समान विशेषताओं द्वारा मेरा रूहानी आकर्षण दिनोदिन बढ़ता जा रहा है

➳ _ ➳ अन्य रूहें स्वतः ही मेरी ओर आकर्षित होती जा रही हैं...

→ मैं अन्य आत्माओं को भी उनके रियल स्वरूप से परिचित करा रही हूं...

→ अपने रियल स्वरूप को जान सब आत्माओं से अज्ञान का पर्दा हटता जा रहा है...

→ धूल छटने लग गई है...

→ सब की मस्तकमणि चमकने लग गई है...

■ वातावरण भी तमोप्रधान से सतोप्रधान होता जा रहा है...

■ सब आत्मायें हीरे समान चमक बाबा की प्रत्यक्षता में सहयोग दे रही हैं...

■ ये अलौकिक अनुभव पूरे विश्व में होने लग गया है...

■ सोने की दुनिया होगी, देवता बनेगें लोग...

- सुख अपार होंगें, खाने को छप्पन भोग...
- सब इसी अनुभव को साकार करने में लग गए हैं...
- वर्तमान के बाप समान फीचर्स फ्यूचर को प्रत्यक्ष करने लग गए हैं...